हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

01935

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2009

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पहला और छठा प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10x2=20**

(a) जब हम गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करते हैं, जब हमारे पैरों में धर्म की बेड़ी पड़ती है, जब हम सांसारिक कर्त्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते है, जब जीवन का भार और उनकी चिन्ताएँ हमारे सिर पर पड़ती हैं ; तो ऐसे पवित्र संस्कार पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए। यह कितनी निर्दयता है जिस समय हमारा आत्मीय युवक ऐसा कठिन व्रत धारण कर रहा हो, उस समय हम आनन्दोत्सव मनाने बैठें। वह इस गुरुतर भार से दबा जाता हो और हम नाच-रंग में मस्त हों। अगर दुर्भाग्य से आजकल यहीं उलटी प्रथा चल पड़ी है, तो क्या आवश्यक है कि हम भी उसी लकीर पर चलें ? शिक्षा का कम-से-कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयों में हम मूर्खों की प्रसन्नता को प्रधान न समझें।

(b) मनोहर ऐसे उद्दीप्त उत्साह से अपने काम में दत्तचित्त था, मानो उसकी युवावस्था का विकास हो गया है। धान के पोलों के ढेर लगते जाते थे। न आगे ताकता था न पीछे, न किसी से कुछ बोलता था, न किसी की कुछ सुनता था, न हाथ थकते थे, न कमर दुखती थी। बलराज ने चिलम भरकर रख दी। तम्बाकू रखे-रखे जल गया। बिलासी खांड का रस घोल कर सामने लायी। उसने उसकी ओर देखा तक नहीं, कुत्ता पी गया। कुआर की धूप थी, देह से चिनगारियाँ निकलती थीं, पसीने की धारें बहती थी ; किन्तु वह सिर तक न उठाता था।

(c) लेकिन मैं इसे दुर्बलता क्यों कहूँ? मैं कोई ऐसा काम नहीं कर रहा हूँ जो संसार में किसी ने न किया हो। संसार में ऐसे कितने प्राणी हैं, जिन्होंने अपने को जाति पर होम कर दिया हो? स्वार्थ के साथ जाति का ध्यान रखनेवाले महानुभावों ही ने अब तक जो कुछ किया है किया है। जाति पर मर मिटनेवाले तो उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। फिर जाति के अधिकारियों में न्याय और विवेक नहीं, प्रजा में उत्साह और चेष्टा नहीं, उसके लिए मर मिटना व्यर्थ है। अंधे के आगे रोकर अपना दीदा खोने के सिवा और क्या हाथ आता है?

(d) अगर वह गहने ही बनवाती, तो एक-एक मकान के मूल्य का एक-एक गहना बनवा सकती थी, पर उसने इन बातों को कभी उचित सीमा से आगे न बढ़ने दिया। केवल यही स्वप्न देखने के लिए। यही स्वप्न! इसके सिवा और था ही क्या! जो कल उसका था उसकी ओर आज आंखे उठाकर वह देख भी नहीं सकती! कितना महंगा था वह स्वप्न! हाँ, वह अब अनाथिनी थी। कल तक दूसरों को भीख देती थी, आज उसे खुद भीख

माँगनी पड़ेगी। और कोई आश्रय नहीं! पहले भी वह अनाथिनी थी, केवल भ्रम-वश अपने को स्वामिनी समझ रही थी। अब उस भ्रम का सहारा भी नहीं रहा!

2. प्रेमचन्द के उपन्यासों की अन्तर्वस्तु का विवेचन कीजिए। **10**

3. 'सुमन' की चरित्रगत विशिष्टताओं का विश्लेषण कीजिए। **10**

4. 'प्रेमाश्रम' के संवेदना और शिल्प पर प्रकाश डालिए। **10**

5. 'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आन्दोलन में महिला पात्रों की भूमिका की चर्चा कीजिए। **10**

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणी लिखिए : **2x5=10**

   (a) 'रंगभूमि' में 'सूरदास'

   (b) प्रेमचन्द का अनूदित साहित्य

   (c) 'प्रेमशंकर' का चरित्र

   (d) 'जोहरा' की चारित्रिक विशेषताएँ।

- o O o -